International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology (www.ijsrset.com)
© 2014 IJSRSET | Volume 1 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

बौद्ध साहित्य में वर्णित प्राच्य भारत की अर्थव्यवस्था

प्रतिमा कुमारी
पूर्व शोध–छात्रा,
संकाय सामाजिक विज्ञान,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत।

भारत में अर्थव्यवस्था का उद्भव एवं विकास – भारत में अर्थव्यवस्था का उद्भव सिंधु घाटी सभ्यता से आरंभ माना जाता है। इसका विकास 3500 ई.पू. से 1800 ई.पू. तक हुआ, जो उन्नत और सम्पन्न आर्थिक प्रणाली की और बढ़ा। यहां के नागरिकों ने कृषि, पशुपालन, विभिन्न औजारों, उपकरणों तथा शस्त्रों का निर्माण तथा अन्य नगरों के साथ का इसका विक्रय आरंभ किया। भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

ब्रिटिश काल में भारत की अर्थव्यवस्था का जमकर शोषण और दोहन हुआ जिसके फलस्वरूप 1947 में आजादी के समय में भारतीय अर्थव्यवस्था अपने सुनहरे इतिहास का एक खंडहर मात्र रह गई। आजादी के बाद से भारत का झुकाव समाजवादी प्रणाली की ओर रहा। सार्वजनिक उद्योगों तथा केन्द्रीय आयोजन को बढ़ावा दिया गया। भारत में 1980 तक जीएनपी की विकास दर कम थी लेकिन 1981 में आर्थिक सुधारों के शुरू होने के साथ ही इसने गति पकड़ ली थी। 1991 में भारत सरकार ने महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार प्रस्तुत किए जो इस दृष्टि से वृहद प्रयास थे कि इनमें विदेश व्यापार, उदारीकरण, वित्तीय उदारीकरण, कर सुधार और विदेशी निवेश के प्रति आग्रह शामिल था। इन उपायों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देने में बहुत सहायता प्रदान की। तब से भारतीय अर्थव्यवस्था दिन प्रतिदिन आगे ही बढ़ती जा रही है। हालांकि मूलभूत ढांचे में तेज प्रगति न होने से एक बड़ा तबका अभी भी नाखुश है और एक बड़ा हिस्सा इन सुधारों से अभी भी लाभान्वित नहीं हुआ हैं।

भारत में धर्मों का उदय एवं बौद्ध धर्म का अर्थशास्त्र से संबंध –भारतीय समाज एक ऐसा समाज है जिसमें सभी समाज व वर्ग के धर्म के लोग निवास करते हैं। हमारे लोकतांत्रिक समाज में धर्म की स्वतंत्रता है। भारत एक धर्म प्रधान देश है। मानव जाति की समस्त मूलभूत अनुभूतियों का सुंदर स्वरूप है धर्म।

भारतीय समाज में जो प्रमुख धर्म प्रचलित हैं, उनमें प्रमुख हैं – हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी, एवं यहूदी धर्म।

कल्याणकारी होना धर्म का प्रधान लक्षण है। धर्म की उत्पत्ति सत्य से होती है। जो धर्म दूसरों को कष्ट दे वह धर्म नहीं है। धर्म ऐसा मित्र है जो मरने के बाद मनुष्य के साथ जाता है। विश्व के प्रमुख सभी धर्म भारत में विद्यमान हैं।

बौद्ध धर्म पूर्वी एशिया एवं दक्षिण एशिया तक फैला है। इसके प्रणेता गौतम बुद्ध शाक्य वंश के महाराजा शुद्धोधन के पुत्र थे। बचपन से ही उनका हृदय मानव दुःखों जैसे बुढ़ापा, बीमारी तथा मृत्यु के प्रति करुणा से भरा था। धर्म प्रचार के लिए इन्होंने भिक्षुओं को संगठित किया, जिसे अशोक जैसे महान सम्राट ने स्वीकारा। निर्वाण के बाद बौद्ध धर्म दो संप्रदायों – महायान और हीनयान में बँट गया। आज भी यह धर्म अपने सिद्धांतों और आदर्शों के कारण कायम है।

बौद्ध धर्म की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण कारण यह था कि इन्होंने नई अर्थव्यवस्था को समर्थन दिया। अहिंसा पर बल देने से कृषक एवं व्यवसाई वर्ग तथा व्यापारियों को राहत मिली। बुद्ध ने समुद्री व्यापार पर भी प्रतिबंध नहीं लगाया। व्यक्तिगत संपत्ति की सुरक्षा, कर्ज एवं सूत की व्यवस्था पर भी बौद्ध साहित्य में प्रतिबंध नहीं लगाया गया। जातक कथाओं में इसका वर्णन विशेष रूप से मिलता है। बुद्ध नगरीय जीवन के विरुद्ध नहीं थे। वे स्वयं विभिन्न नगरों में घूम–घूम का धर्म का प्रचार करते थे, जिससे प्रभावित होकर बहुत सारे व्यापारियों ने बौद्ध धर्म अपनाया तथा इस धर्म को भरपूर आर्थिक सहायता भी प्रदान की।

भारत के राज्य शासन में अर्थशास्त्र का महत्व – भारत के राज्य शासन में अर्थशास्त्र का विशेष महत्व है। कौटिल्य का ''अर्थशास्त्र'' राजनीतिक सिद्धांतों की एक महत्वपूर्ण कृति है। इसके अंतर्गत राजनीति शास्त्र, धर्म शास्त्र, अर्थशास्त्र, कानून आदि का अध्ययन किया जाता था। आचार्य कौटिल्य की दृष्टि में राजनीति शास्त्र एक स्वतंत्र शास्त्र है और आन्वीक्षिकी (दर्शन), त्रयी (वेद) तथा वार्ता एवं कानून आदि उसकी शाखाएं हैं। कौटिल्य का मानना था कि समाज की रक्षा में समाज का प्रत्येक व्यक्ति धर्मानुसार कार्य तभी करेंगे, जब समाज में दण्ड व्यवस्था होगी। यदि समाज में दण्ड व्यवस्था का भय ही नहीं रहे तो सभी अपने–अपने कर्तव्यों का पालन सुचारू रूप से नहीं करेंगे। अतः संपूर्ण प्रजा की रक्षा के लिए राजनीति व्यवस्था अत्यंत आवश्यक है क्योंकि प्रजा ही अपने–अपने कर्तव्यों का पालन भली प्रकार कर सकती है। उस समय अर्थशास्त्र को राजनीति और प्रशासन का शास्त्र माना जाता था।

बौद्धकाल की राज्य शासन व्यवस्था में राजकोष तथा आर्थिक कर संग्रहण – प्राचीन काल से वर्तमान तक प्रत्यक्ष कर प्रणाली किसी न किसी रूप में चलती आ रही है। मनुस्मृति और अर्थशास्त्र दोनों में अनेक प्रकार के करों के संदर्भ मिलते हैं।

भारत में 18वीं शताब्दी के मध्य में अंग्रेजों के आगमन के पूर्व भूमिकर के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के कर लगाए जाते थे। किंतु इन सबमें भूमि कर ही प्रधान था। भारत में सन् 1860 में प्रथम बार 'आयकर' की व्यवस्था की गई। बौद्धकाल में नगरों के अभाव में उन्नत कृषि तकनीकी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। ग्रामों का शासन ग्राम सभा द्वारा चलाया जाता था। ग्राम सभा में ग्राम ग्राम के बड़े बुजुर्ग सम्मिलित थे और इनका अध्यक्ष मुखिया या ग्राम भोजक होता था। ग्राम भोजक का एक प्रमुख कार्य ग्रामीण जनता से कर वसूल कर सम्राट को देना होता था।

भूमि कर उपज के छठवें से लेकर बारवें भाग तक होता था। इसके अतिरिक्त वे ग्राम में शांति व्यवस्था कायम रखते हुए नागरिकों की सुख सुविधा हेतु सार्वजनिक हित के कार्य जैसे – सड़कों का निर्माणख सिंचाई के लिए नहर ख्तालाब आदि का निर्माण, संस्थागार धर्मशालाएं आदि बनवाने का कार्य भी किया करती थी। इस काल में प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकता की वस्तुएं अपनी सीमा में प्राप्त कर लेते थे और इस प्रकार वे आत्मनिर्भर थे। जातक ग्रंथों से पता चलता है कि समान व्यवसाय करने वाले लोग एक ही गांव में निवास करते थे।

निष्कर्ष के रूप से हम कह सकते हैं कि बौद्ध कालीन समाज में अर्थव्यवस्था बहुत सुदृढ़ थी। इसका प्रमुख कारण यह था कि बौद्ध धर्म को तत्कालीन भारत के सुप्रसिद्ध व्यापारियों एवं साहूकारों ने भी उदारता पूर्वक धन दान दिए थे क्योंकि भगवान बुद्ध के सिद्धांत उनकी मान्यताओं के अनुकूल थे। बुद्ध ने सूदखोरी को सम्मानित व्यवसाय मानते हुए उसको मान्यता प्रदान की, जबकि ब्राह्मण ग्रंथ इसे निंदनीय मानते थे। इस कारण उस काल में सभी व्यापारी गण बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हो गए। बौद्ध काल में कभी भी आर्थिक संकट उपस्थित नहीं हुआ था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) बौद्ध साहित्य में भारतीय समाज परमानंद सिंह (वाराणसी 1996)

2) समाज और धर्म मदन मोहन सिंह (हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1972, बिहार) और

3) बुद्ध और बौद्ध धर्म चतुरसेन शास्त्री (1996 लखनऊ)

4) प्राचीन भारत का इतिहास रोमिला थापर (नई दिल्ली)

5) इकॉनामिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया रमेश चंद्र (1963 नई दिल्ली)

6) कौटिल्य अर्थशास्त्र वाचस्पति गैरोला (चौखंबा विद्या भवन वाराणसी)

7) प्राचीन भारत की अर्थव्यवस्था डॉ.कमल किशोर मिश्र

8) भारत का प्राचीन इतिहास रामशरण धर्मा